

≡ मासिक

इसलाहे समाज

अक्टूबर 2018 वर्ष 29 अंक 10

संरक्षक

असगर अली 'सलफी'

संपादक

एहसानुल् हक्क

□	वार्षिक राशि	100 रुपये
□	प्रति कापी	10 रुपये
□	टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से
भारत आफसेट 2035 कासिम जान स्ट्रीट,
बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले
हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. हसद की निंदा	2
2. इंसान के जीवन की दिशा	4
3. देश में अमन व शान्ति की स्थापना...	5
4. हज़रत मुहम्मद स० की खूबियाँ	7
5. मर्कज़ी जमीअत की प्रेस रितीज़	10
6. कुरआन में वचन निर्वाह	13
7. प्रेस रितीज़	15
8. कुरआन में छमा करने का उल्लेख	17
9. प्रेस रितीज़	19
10. पारिवारिक संबन्ध हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श की रोशनी में	21
11. आप का स्वास्थ्य	22
12. पर्यावरण की सुरक्षा	23
13. इस्लाम में बुनियादी अधिकार	24
14. बच्चों में डिप्रेसन का एलाज	26
15. मुसलमानों की खूबिया कुरआन की रोशनी में	27

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

इसलाहे समाज
अक्टूबर 2018

3

इंसान के जीवन की दिशा

नौशाद अहमद

यह सभी को मालूम है कि मौत दुनिया की सबसे बड़ी सच्चाई है, इससे कोई बड़े से बड़ा इन्सान भी बच नहीं सकता, माल व दौलत मौत से नहीं बचा सकती है, यह इस संसार के पालनहार की एक अटल व्यवस्था है और इसमें जो बुद्धिमत्ता है इसको हर प्रशिक्षित भली भांति जानता है।

इस संसार में जितने भी प्रकार के कानून बनाये जाते हैं उसका असल मकसद यह होता है कि देश समाज के वासी एक सिस्टम के पाबन्द हो जायें और उनके रहन सहन, लेन देन की सही दिशा तय हो जाये, कोई किसी पर अपनी धाक न जमा सके, सब लोग कानून के पाबन्द रहें ताकि समाज का ताना बाना बाकी रहे, लेकिन अगर कोई कानून को तोड़ता है या अपनी मर्जी के अनुसार चलता है तो फिर वह दिशाहीन हो जाता है

और यह इन्सान की मानसिक कमजोरी का प्रतीक है।

यह दुनिया इन्सान के लिये परीक्षा स्थल है इस दुनिया में जो भी इन्सान आया है उसको एक दिन अपने कर्मों का लेखा जोखा देना पड़ेगा, यह हिसाब तो है बहुत आसान लेकिन इन्सान ने इसको अपने लिये मुश्किल बना दिया है। आसान इस अर्थ में है कि इस संसार के पालनहार अल्लाह ने यह स्पष्ट कर दिया है कि संसार में जो इन्सान अच्छा कर्म करेगा और हमारे द्वारा बताये गये नियमों के अनुसार जीवन यापन करेगा वह स्वर्ग में जायेगा। इसके विपरीत जो इन्सान अपने पालनहार के बताए गये नियमों का पालन नहीं करेगा, अपनी मर्जी और अपने मन के कानून का पालन करेगा अर्थात् बुरे कर्म करेगा तो वह नरक में जायेगा।

इस्लाम धर्म ने इन्सान के

जीवन की दिशा तय कर दी है, यह अल्लाह की बतायी हुयी दिशा है, जो अच्छे और बुरे में अन्तर करने की सीख देती है, जो इन्सान अपने पालनहार के निर्देशों पर चलता है वह सही दिशा में चलता है और इस दुनिया का जो भी इन्सान अपने मन के निर्देशों का पालन करता है वह दिशाहीन हो जाता है। कितना भाग्यशाली है वह इन्सान जो अपने रब की बताई हुयी दिशा पर चलकर स्वर्ग में चला जायेगा और कितने दुर्भाग्य की बात है उस इन्सान के लिये जो अपने कुकर्मों की वजह से नरक में चला जायेगा।

इसलिये हर इन्सान को अपने जीवन की दिशा को अपने पालनहार के बताये गये सिद्धांतों के अनुसार ठीक करना चाहिये। इन्सान को अल्लाह ने अक्ल दी है उसका इस्तेमाल अपने को आखिरत में सफल बनाने में करना चाहिये। □□□

देश में अमन व शान्ति की स्थापना में कल्याणकारी संस्थाओं की भूमिका

मुहम्मद फारूक मुहम्मद इलयास सलफी

एक खुशगवार और सफल समाज के लिये अमन व शान्ति अत्यंत आवश्यक है इसके बिना जीवन का सुख और समाजी राहत असंभव है इसी लिये इस्लाम ने इन्सानों को जीवन के हर मैदान में अमन व अमान और सुख एवं संतुष्टि स्थापित करने का आदेश दिया है। डा० हमीदुल्लाह इस संबन्ध में लिखते हैं कि “विभिन्न शब्दकोषों और इन्साइक्लोपीडिया की रोशनी में अमन व शान्ति का भावार्थ यून तय किया जा सकता है दिल का सुकून, आंतरिक सुख, घुटन से मुक्ति, समाजी एतबार से आपसी सहयोग, खुशहाली का साधारण वातावरण, अधिकार एवं कर्तव्यों की संतुलित अदायगी और समाजी सौन्दर्यता इसके भावार्थ में शामिल है”

मानव संसार पर इस्लाम और इस्लाम के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के असंख्य उपकार हैं

वहीं एक उपकार यह भी है कि संसार को उनके लिये अमन व प्रेम का स्थल बनाया और इन्सानों के दिलों में प्यार मोहब्बत, अमन व शान्ति की भवना को विकसित किया और एक दूसरे को अमन व शान्ति के साथ रहने का आदेश एवं उपदेश दिया। अमन के वातावरण को बेहतर बनाने की शिक्षा दी और अशान्ति के अन्त के लिये तमाम उपाय बताये और समाज को शान्तिपूर्ण बनाये रखने, इन्सानों को राहत और संतुष्टि पहुंचाने और अमन व सुरक्षा को फैलाने का निर्देश दिया क्योंकि इस्लाम अमन व सुरक्षा, सुधार, सफलता, हमदर्दी, बीमारपुर्सी, अल्लाह की राह में खर्च करने और मानव सेवा का धर्म है जिसका सन्देश समाज एवं मानवता का सुधार है। जब हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और चारों खलीफा रजिअल्लाहो अन्हुम की व्यवस्था का अध्ययन करते हैं तो हमें मानव सेवा की

कार्रवाइयों और गतिविधियों का भरपूर अन्दाज़ा होता है। इस्लाम में कल्याणकारी, सुधार और समाजी गतिविधियों का मकसद अल्लाह की खुशी की प्राप्ति है। यही वजह है कि इस्लाम ने मानव सेवा को धार्मिक इबादत का दर्जा दिया है और मानव सेवा की जिम्मेदारी को आध्यात्मिक बुलन्दी का माध्यम करार दिया है यहीं नहीं बल्कि इस्लाम में तो भूखे जानवरों को चारा खिलाना और पियासे जानवरों को पानी पिलाना आखिरत (परलय) में मुक्ति का माध्यम करार दिया है।

संसार में अमन व शान्ति और राहत को विकसित करने के लिये इस्लाम ने जहां बहुत से तरीके बताये हैं वहीं एक तरीका कल्याणकारी सेवा का भी बताया है। दुनिया में देश और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अमन व शान्ति की स्थापना में कल्याणकारी सेवाओं और इससे संबन्धित संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है मानव

सेवा का प्रारूप हमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मक्की और मदनी जिन्दगी में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

आज भी देश और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत सी कल्याणकारी संस्थाएं हैं जो पूरी दुनिया में कल्याणकारी सेवाएं कर

रही हैं। स्वयं हमारे हिन्दुस्तान में भी बहुत से रिफाही एदारे (कल्याणकारी संस्थाएं) रिफाही

खिदमात से देश के अन्दर अम्न व शान्ति स्थापित करने का प्रयास करती रही हैं और आज भी कर रही हैं। हिन्दुस्तान के अन्दर पाये जाने वाले सभी धर्मों के मानने

वालों के पास विभिन्न नामों से रिफाही एदारे (वेलफियर सूसाइटीज) हैं जो यथाशक्ति मानव सेवा कर रही हैं उनमें से एक मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द भी है।

□□□

अहले हदीस कम्पलैक्स और अहले हदीस मंज़िल के दोनों इतिहासिक और महान निमार्ण कार्यों के सिलसिले में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल अगले सप्ताह विभिन्न राज्यों के दौरे पर। इन्शाअल्लाह

जमाअती मित्रों और कौम व मिल्लत के शुभचिंतकों को मालूम है कि अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली और अहले हदीस मंज़िल जामा मस्जिद दिल्ली में दो भव्य तारीखी बिलडिंगों के निमार्ण का काम जारी है। इस सिलसिले में अल हम्दुलिल्लाह अहले हदीस कम्पलैक्स के महान निमार्ण प्रोजेक्ट की दूसरी मंज़िल की ढलाई का काम हुआ चाहता है और अहले हदीस मंज़िल में तरमीम और निमार्ण का काम तीसरी मंज़िल तक पहुंच चुका है जो अल्लाह के फज्ल व तौफीक के बाद मुहसिनीने जामअत व जमीअत की सखावत व दानवीरता की देन है। अधिकृत सहयोग के लिये अहबाबे जमाअत सूबाई जमीअतों से तनसीक के बाद मस्जिदों में बाजाबता और मुसलसल एलान फरमायें।

जल्द ही मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल आप की खिदमत में हाज़िर हो रहा है। इस महान और तारीखी खैर के काम में अपना भर पूर हिस्सा और रोल अदा करके पुण्य के पात्र बनें।

नोट:- इस सिलसिले में संबन्धित राज्यों के पदधारियों और जिम्मेदारान को सूचना दे दी गयी है।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c 629201058685 (ICICI Bank) Chandni Chowk, Delhi-6
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICICOO06292)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खूबियाँ

मौलाना नियाज़ अहमद मदनी तैयबपुरी

हज़रत मुहम्मद सल्ल० की ज़िन्दगी हमारे लिए बेहतरीन नमूना है। तालीम और तरबियत में आप आदर्श थे। आपने फरमाया है “मुझे मोअल्लिम (अध्यापक) बना कर भेजा गया है।” सारे नबी तालीम और तरबीयत का काम करते थे और इसी काम के लिए उनको भेजा गया था।

रसूल सल्ल० ने मस्जिद में तालीम दी। एक बार एक साहेब मस्जिदे नबवी में खड़े हुए और पूछा “हम कहां से एहराम बांधें? आप ने उनको बताया कि मदीना वाले जुल-होलैफा से, शाम वाले जोहफा से और नज्द वाले कर्न से बांधेंगे”। (बुख़ारी: १/२३०)

इनके अलावा मिना में, घर में, घर वालों को, चचा को, चचा ज़ाद भाई को, चचा ज़ाद बहेन को, साथी को, जवानों को, बच्चों को, औरतों को, दीहाती को और नौ मुस्लिमों को मोनासिब वक्त में मोनासिब तरीके से तालीम दी है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० दुनिया

के सबसे बड़े मोअल्लिम और मोरब्बी थे।

उस काल में मौजूदा ज़माने की तरह मदर्स नहीं थे, मस्जिद ही में शिक्षा का काम होता था। इस्लाम का शुरू ज़माना था। रसूल सल्ल० ने तालीम और तरबियत का जो नियम बताया है आज भी दुनिया उससे आगे नहीं जा सकी है और कड़वा सच यह है कि योरोप के विद्वान रसूल सल्ल० की तालीमात का गहरा अध्ययन और हदीसों से फ़ायदा उठाते रहे हैं फिर उससे कोई नतीजा लेते हैं, लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनकी हदीसों का हवाला नहीं देते।

निम्न में संक्षेप में हम नबी सल्ल० की तालीम और तरबियत के तरीका को लिख रहे हैं। इसे मैं ने डाक्टर फ़ज़ले इलाही की किताब से लिया है। आप की तालीम से जो कानून और सिद्धान्त समझा जा रहा है मैं सिर्फ उसी को लिख रहा हूँ।

१. हर मुनासिब जगह में तालीम देना।

२. हर उम्र और हर प्रकार के लोगों को पढ़ाना।

३. जब भी अवसर मिले उससे फ़ायदा उठाना और तरबियत करना

४. पढ़ने वाले बच्चों का स्वागत करना।

५. बातें बताते समय बच्चों और बड़ों को अपने से करीब करना।

६. बच्चों की तरफ तवज्जोह करना और बातें ध्यान से सुनना।

७. बात करने से पहले लोगों को खामोश करना।

८. छात्रों के सर पर हाथ फेरना, कन्धा पकड़ना, हाथ पकड़ कर कोई बात समझाना।

१०. छात्रों के लिए दुआ करना।

११. ठेहर कर बात करना।

१२. आवश्यकता पड़ने पर बात को दोहराना।

१३. कोई बात बताते समय संकेत और एशारों का प्रयोग करना।

१४. लकीर खींच कर और शकल बना कर कोई चीज़

समझाना।

१५. मिसाल बयान करना।

१६. अमल करके कोई बात बताना और समझना।

१७. किसी चीज़ को पहले संक्षिप्त तरीके से बताना फिर उसके बाद उसकी तफ़्सील बयान करना।

१८. सवालिया तरीका अख़्तियार करना ताकि लोगों को मोतवज्जेह करें।

१९. छात्रों से प्रश्न करना।

२०. वह बातें जिन को खुल कर बयान करने में शर्म महसूस होती है उसको एशारे में समझा देना।

२१. ज़रूरी बातों की तालीम देने में शर्म न करना।

२२. सवाल करने की अनुमति देना।

२३. अच्छा सवाल करने पर तारीफ़ करना।

२४. जवाब देने में तशबीह (उपमा) का प्रयोग करना।

२५. कभी सवाल से ज़्यादा जवाब देना।

२६. किसी प्रश्न का जवाब मालूम न होने पर साफ़ तौर से कहना कि मैं नहीं जानता।

२७. बेकार और बिना ज़रूरत के सवाल पर आपत्ति

करना।

२८. किसी बात को अच्छी तरह से समझने के लिए बहस करने की अनुमति देना।

२९. लोगों से यह कहना कि अगर मैं भूल जाऊं तो मुझे याद दिला देना।

३०. छात्रों तथा लोगों का मनोबल बढ़ाने के लिए अपने सामने तालीम और तरबियत का अवसर देना।

३१. लोगों को दीनी बातें बताना और उन्हें दोहराने के लिए कहना और ग़लती होने पर उसको सही करना।

३२. नम्रता अपनाना, तकबुर और अभिमान से परहेज़ करना।

३३. प्यार और नर्मी से तालीम देना।

३४. ऐसी ग़लती पर नाराज़ होना जिसकी उम्मीद नहीं थी।

३५. ग़रीब छात्रों का ख्याल रखना।

३६. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों की सलाहियों और योग्यताओं को जानते थे और मुनासिब अवसर पर इस का वर्णन भी करते थे।

३७. छात्रों और लोगों के

हालात को मददे नज़र रखते थे, जैस हालात होते थे उसी के अनुसार उनके साथ मामला करते।

३८. रसूल सल्ल० लोगों पर अपनी बात या काम के असर पर नज़र रखते और उनकी परेशानी को दूर कर देते।

३९. छात्रों की ग़ैर हाज़िरी पर उनके बारे में पूछना।

४०. आसानी करना और लोगों को कष्ट और परेशानी में न डालना।

४१. ताक़त के अनुसार तालीम देना, उतनी ही बातें बताना जितना लोग समझ जाएं।

४२. छात्रों को उनके नाम या उपनाम से पुकारना, नबी सल्ल० की यह और दूसरी तालीमात पढ़ाने और तरबियत के बारे में बहुत अहम हैं, मां, बाप, अध्यापक और अध्यापिका इनको ध्यान पूर्वक पढ़ें और बच्चों की तालीम और तरबियत का काम इसी के अनुसार करें। ऐसा करने से घर, मदर्सा और स्कूल में जो बहुत से मसले पैदा होते हैं वह ख़त्म हो जाएंगे।

□□□

मर्कज़ी जमीअत की प्रेस रिलीज़

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का राहत प्रतिनिधि मण्डल केरला में, दूसरी राहती सामग्री के साथ सैलाब प्रभावितों के दर्मियान रिलीफ वर्क जारी, दूसरा उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल ४ सितंबर को केरला पहुंचेगा

दिल्ली १ सितम्बर २०१८
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अखबारी बयान के अनुसार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का राहती प्रतिनिधिमण्डल मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष के तत्वाधान में रिलीफ की दूसरी किस्त के साथ केरला के सैलाब प्रभावित क्षेत्रों के दौरे पर है जिस में प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस झारखण्ड के मौलाना अकील अखतर मक्की आदि शामिल हैं। इस राहती प्रतिनिधिमण्डल ने केरला के विभिन्न सैलाब प्रभावित एलाकों का दौरा किया और वहां के सैलाब प्रभावितों के बीच नक़द और धरेलू वस्तुएं बांटी। प्रतिनिधिमण्डल ने काली कट,

कोचीन, आला पोजा, वायनाड, मालापूरम के जिन स्थानों का दौरा करके रिलीफ का काम किया उनमें चंबा कोलम, मेडोडी, आलवा, प्रोर, यरनाकलम, आराममायल, पीतागोड आदि स्थान उल्लेखनीय हैं। केन्द्रीय प्रतिनिधिमण्डल के साथ प्रादेशिक इकाई नदवतुल मुजाहिदीन और उप इकाइयों के पदधारी एवं सदस्यगण विशेष रूप से नूर मुहम्मद शाह, खाजिन नदवतुल मुजाहिदन, सी.मुहम्मद बाबू सेठ, डा० हुसैन मदऊर, मौलाना अब्दुर्रहमान मदनी, मौलाना जकरिया सलाही, डा० अफजल, अब्दुर्रहमान सुल्लमी, एम.सी. फैसल, कबीर करीर, माहन अनवर, शीबू बाबू, ओम खान, अब्दुर्रहीम मदनी, इकबाल पनापरा, इसमार्ईल अलपी, एम सालेह ऐराबोकर, बशीर भाई, रफीक भाई भी रहे।

प्रेस रिलीज के अनुसार सैलाब की सूचना आते ही मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के

अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने सैलाब प्रभावितों से सहानुभूति का इज़हार और उनको सब्र एवं संयम का उपदेश देने के साथ साधरण और असाधारण से केरला के दुखग्रस्त सैलाब प्रभावित भाइयों के हक में दुआ करने और उनका भरपूर सहयोग करने की अपील की अतः मर्कज की अपील पर प्रादेशिक जमीआत अहले हदीस विशेष रूप से प्रादेशिक जमीअत अहले हीस मध्यप्रदेश, प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस तमिलनाडो एवं पाण्डेचेरी और प्रादेशिक जमीअतअहले हदीस झारखण्ड ने भी अपना भरपूर सहयोग सैलाब प्रभावितों के लिये भेजवाया और राहत का काम किया और यह सिलसिला अभी तक जारी है। जबकि अन्य प्रादेशिक जमीआत अहलेहदीस निरन्तर संपर्क में हैं और उनकी तरफ से आने वाली रूकूमात को सैलाब प्रभावितों के पुनर्वास के लिये भेजने की तैयारी संगठित तौर

पर हो रही है। और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का दूसरा उच्च स्तरीय राहती प्रतिनिधिमण्डल राहती सामग्री लेकर ४ सितंबर २०१८ को केरला पहुंचेगा।

(२) मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी के तत्वाधान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का उच्च स्तरीय राहती प्रतिनिधिमण्डल राहती सामग्री की तीसरी किस्त के साथ केरल में, सम्माननीय अमीर ने, अवाम और खवास की सैलाब प्रभावितों की भरपूर मदद की अपील

दिल्ली ६ सितम्बर २०१८

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अखबारी बयान के अनुसार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का एक उच्च स्तरीय राहती प्रतिनिधिमण्डल मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी के तत्वाधान में राहती सामग्री की तीसरी किस्त के साथ केरला के दौरे पर है जिस में प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस कर्नाटक एवं गोवा जिसने सैलाब ग्रस्तों के लिये एक अच्छी खासी

इसलाहे समाज
अक्टूबर 2018 **10**

रकम जमा की थी, के सचिव मुहम्मद असलम खान और ट्रेजरर जे. मंसूर कुरैशी उर्फ दादू भाई वगैरह और गुजरात के अहबाब शामिल हैं। सम्माननीय अमीर ४ सितंबर २०१८ की रात को केरला पहुंचे और अगले दिन उनके तत्वाधान (क्यादत) में प्रतिनिधि मण्डल ने केरला के आलप पूरा, एरना कूलम, परीशोर ओरकोट एम जिलों के विभिन्न सैलाब प्रभावित स्थानों उदाहरण स्वरूप पलाथरोथी, चैम्बो पूरम, पोंगा, नेडोमोडी, मंकम्बू, चिंगम, अलवा, कनोककारा, अलकोकारा, परायार आदि का दौरा करके वहां की सहीह स्थिति का जायज़ा लिया और प्रभावितों के बीच नकद, चेक और घरेलू सामान बाँटे और यह सिलसिला अभी तक जारी है। इस उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मंडल के साथ सभी दौरों में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की केरला यूनिट नद्वतुल मुजाहिदीन के जिम्मेदारान व अहबाब नूर मुहम्मद शाह खाजिन नद्वतुल मुजाहिदीन केरला, एच बाबू सेठ उपाध्यक्ष नद्वतुल मुजाहिदीन केरला, मौलाना

जकरिया सलाही महा सचिव शुब्बानुल मुजाहिदीन, मुहम्मद माहन, अनवर नौचीमा, अब्दुन्नासिर एलोकरा, मुहम्मद इसमाईल, शीबू बाबू, अफज़ल ऐपू, इरशाद मानेचरी आदि शरीक रहे।

प्रेस रिलीज के अनुसार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के मददे नज़र संगठित तरीके से प्रभावितों का पुनर्वास का प्रोग्राम है इसलिये सहीह परिस्थिति के जायज़े के बाद इस बारे में जल्द ही कार्यविधि तैयार किया जायेगा। इसी प्रकार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की प्रादेशिक इकाई केरला नद्वतुल मुजाहिदीन ने भी बड़े स्तर पर रिलीफ का काम किया है और उसने सैलाब प्रभावितों के पुनर्वास की बड़ी योजना बनायी है इसका काम भी अन्य कामों की तरह प्रमुख और स्पष्ट है।

प्रेस रिलीज के अनुसार सम्माननीय अमीर का आज का दिन काफी व्यस्त रहा और आप ने प्रतिनिधिमण्डल के साथ विभिन्न स्थानों मिसाल के तौर पर मंझली, अडवाशरी, पारावोर मोपाथदम,

पोरायार, वरापज़ा, वेली याथोनाडो और खवास से अपील की कि है और वह अपने कर्मों और आचरण का जायज़ा लेकर अपना सुधार करें, अत्याचार और फसाद से दूर रहें और अल्लाह के कानूने फितरत से बगावत न करें। यह सैलाब भी एक बड़ी आजमाइश है। इसलिये हम सब को अपने पालनहार की तरफ लौटना चाहिये और अपने दुखग्रस्त भइयों की मदद करनी चाहिये।

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अनुरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

कुर्आन में वचन निर्वाह

अहमद एम उमरी

इस्लाम में वचन निर्वाह की बड़ी महत्ता है और वचन निभाने के बारे में कुरआन शरीफ ने हम इन्सानों को कड़ा आदेश दिया है और वचन तोड़ने की निन्दा की है। कुरआन की निम्न आयतों में वचन निर्वाह की अहमियत को बताया गया है।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है: “अल्लाह ने ईमानदारी से और जो उनमें से नेक आमाल करते हैं उनसे बख्शिश और बड़े बदले का वादा लिया हुआ है”। (सूरे फत्ह २६)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है: “यह वादा हमारे जिम्मे है बेशक हम करने वाले हैं” (सूरे अंबिया १०४)

फरमाया: “कहा: मेरे भाइयो! क्या तुम्हारे पर्वरदिगार ने तुम से नेक वादा न किया था (फिर यह क्या तुम्हारी अक्ल पर पत्थर पड़ गये) क्या मेरी अनुपस्थिति का जमाना तुम पर लम्बा हो गया था? या तुमने चाहा कि तुम्हारे

पर्वरदिगार का ग़ज़ब तुम पर टूट पड़े इसलिये तुमने मेरे आदेश के खिलाफ काम किये मैं तो तुम को तौहीद का पाठ पढ़ा कर गया था और तुम लोगों ने मेरे पीछे यह क्या गुल खिलाया”। (सूरे त्वाहा-८६)

फरमाया: “और (सृष्टि के दर्मियान) जब फैसला हो चुकेगा तो शैतान कहेगा कि (सुनो! अस्ल) बात यह है कि अल्लाह ने तुम से जो सच्चा वादा किया था (उसने तो पूरा कर दिया) और मैंने जो तुम से वादा किया था (यानी तुम्हारे दिलों में बुरे काम का नेक नतीजा डाला करता था वह मैंने पूरा किया (दोष सरासर तुम्हारा है)” (सूरे इबराहीम-२२)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है: “वचन को पूरा करो क्योंकि क्यामत के दिन वचन के बारे में पूछा जायेगा”। (सूरे इसरा-३४)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है “(स्पष्ट शब्दों में

सुनो कि) अल्लाह के नाम से जब मुआहिदा करो तो पूरा किया करो और कसमों को (किसी भी हाल में विशेष कर) मज़ीद ताकीद करने के बाद (तो बिल्कुल) न तोड़ा करो। लेकिन तुम ऐसे हो कि वादा करके भी तोड़ देते हो”। (सूरे नह्ल-६१)

अब्दुल्लाह बिन अबिल खनसरा से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार वादा किया कि अमुक जगह पर मिलेंगे। वादा के अनुसार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हाज़िर हो गये लेकिन अब्दुल्लाह तिजारती कारोबार में फंस कर वादा भूल गये। तीन दिन के बाद अब्दुल्लाह को अपना वादा याद आया तो वह तेज़ी से गये और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वहां मौजूद पाया वह शर्मिन्दा (लज्जित) हुये हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें बुरा भला तो

नहीं कहा लेकिन फरमाया: अब्दुल्लाह तुम ने मुझे बड़ा दुख दिया मैं तीन दिन से आप के इन्तेज़ार में रहे”

वादा करके वादा न निभाना मुनाफिक (मिथ्याचारी) की पहचान है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुनाफिक की तीन पहचान है जब वह वादा करता है तो वादा नहीं पूरा करता जब झगड़ा करता है तो गाली देता है और जब उसके पास अमानत (धरोहर) रखी

जाती है तो वह उसमें ख्यानत (धोखा धड़ी) करता है।

वादा पूरा न करना शैतान की पहचान है जैसा कि उपर्युक्त आयत में है जबकि वादा पूरा करना पुण्य का काम है और इस्लाम ने वचन निर्वाह की प्रशंसा की है। कुरआन में वचन निर्वाह को ईमान वालों और संयमी लोगों की पहचान बतायी गयी है।

वचन निर्वाह के बारे में यह चेतावनी दी गयी है कि वचन भंग करने वालों से पूछ ताछ

करके हम गिरफ्तार करेंगे और कठिनाइयों में लिप्त कर देंगे।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है कि “उनके वचन भंग करने की वजह से हमने उन पर लानत की और उनके दिलों को सख्त कर दिया”। (सूरे माइदा-93)

सारांश यह है कि वचन तोड़ना निन्दनीय है और वचन निभाना प्रशंसनीय है।

(जरीदा तर्जुमान 96-30 सितंबर 2017)

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

(प्रेस रिलीज़)

अल मअ्हदुल आली लित्त्खस्सुस फिद्दिरासातिल इस्लामियह नई दिल्ली में स्वतंत्रता समारोह का आयोजन आज़ादी हर कौम का अधिकार है और देश का निर्माण एवं विकास सबका कर्तव्य : मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली १६ अगस्त २०१८
अल्लाह ने यह लम्बी चौड़ी ज़मीन बनायी है और उसकी मरज़ी है कि ज़मीन अम्न व शान्ति और प्यार मोहब्बत का स्थल बनी रहे और जब इस पर अत्याचार, बुराई, फसाद और अशान्ति फैल जाये जो कि गुलामी है तो उसका हुक्म है कि इस गुलामी से आज़ादी के लिये प्रयास किया जाये। हमारे असलाफ विशेष रूप से जमाअत अहले हदीस के ओलमा अवाम, मदारिस, मसाजिद, अध्यापक, छात्र, इमाम, मुतवल्लीन और ताजिरो ने एकजुट होकर अंग्रेजों को देश निकाला देने के लिये इसी ईमानी और राष्ट्रीय भावना से संघर्ष किया था और उनकी अथाह जानी और माली कुर्बानियों की बदौलत १५ अगस्त १९४७

को यह देश आज़ाद हुआ था। यह यथार्थ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने व्यक्त किया। सम्माननीय अमीर कल स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अहले हदीस कम्प्लैक्स ओखला नई दिल्ली में ध्वजारोहण के बाद संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस हिन्दुस्तान के हर छोटे बड़े और हर मर्द और औरत के लिये अत्यंत हर्ष का सन्देश है यही वजह है कि आज पूरा देश स्वतंत्रता समारोह (जश्ने आज़ादी) में मग्न हैं। मैं इस शुभ अवसर पर अल मअ्हदुल आली लित्त्खस्सुस फिद दिरासतिल इस्लामियह के अध्यापक एवं छात्रों, मर्कज़ी सूबाई, ज़िलई और स्थानीय

जमीआत अहले हदीस के पदधारियों एवं सदस्यगण और देश भर में फैले हुये मदारिस और जामिआत के जिम्मेदारान, अध्यापक एवं छात्र और सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई पेश करता हूं जिन्होंने यहां और देश भर में स्वतंत्रता दिवस पर भव्य समारोह आयोजित किये हैं। राष्ट्रीय झण्डा लहराया है, जोश व जज़बा और विमुग्धतापूर्ण राष्ट्रीय तराना गाया गया है और इस संकल्प को दोहराया है कि जिस प्रकार यह महान देश अपनी राष्ट्रीय सदभावना, आपसी मेल मिलाप, सांप्रदायिक सौहार्द एवं एकता, अम्न व शान्ति, विकास व समृद्धि, मानवता वाद और विभिन्न प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं की वजह

से पूरे संसार से प्रमुख और अच्छा है, इसी प्रकार से भविष्य में भी इन हवालों से इसे पूरी कुव्वत और ऊर्जा के साथ स्थापित और बाकी रखेंगे।

अध्यक्ष महोदय (अमीरे मोहतरम) ने अपने संबोधन में कहा कि यह आज़ादी जिस प्रकार हज़ारों जानों और असीम मालों की कुर्बानी से हासिल होती है इसी तरह यह हर नागरिक के अपने जजबात को दबा लेने और अपने मन को मार लेने और देश के लिये कुर्बानी देने के जजबे से बाकी रहती है, कुछ नादानों ने अपनी सियासी और जाती बुनियादों पर इस आज़ाद भारत को लूटने और इसमें नफरत की बीज बोने का काम किया है जिसकी वजह से हमारा देश आज़ादी के बावजूद विभिन्न प्रकार के मानसिक एवं वैचारिक गुलामी के शिकनजों में जकड़ता चला जा रहा है ऐसे में वह लोग जिन के असलाफ (पूर्वजों) ने आज़ादी बहुमूल्य जानी व माली कुर्बानियां पेश करके प्राप्त की थी उन की

जिम्मेदारी है कि वह इस आज़ादी की सुरक्षा के लिये सौ सौ जान से फिदा होने का जज़बा रखें और देश व मिल्लत के निर्माण एवं विकास के लिये हर वक्त तैयार रहें इसी भावना के तहत मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने अपील की थी कि यथापूर्व बल्कि पहले से भी बेहतर अन्दाज में शुक्रगुज़ारी और हर प्रकार की कुर्बानी पेश करने के जजबे से सुसज्जित होकर आज़ादी का जश्न मनाएं ताकि लोगों को आज़ादी की अहमियत समझ में आये उनके अन्दर आज़ादी की हिफाज़त और देश व मिल्लत की सेवा का जजबा पैदा हो और दुनिया जान ले कि इस महान देश के वासी अपने प्रिय देश की सुरक्षा के लिये कितना कमरबस्ता और उसके निर्माण एवं विकास के लिये कितना प्रयासरत हैं।

स्पष्ट रहे कि कल यहां अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द, सूबाई जमीअत अहले हदीस दिल्ली और अल मअ्हदुल

आली लित्तखस्सुस फिददिरासातिल इस्तामिया अबुल फजल इन्कलेव जामिया नगर नई दिल्ली की तरफ से प्रतिष्ठित स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें अल मअ्हदुल आली के अध्यापक और क्षात्र के अलावा मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द और सूबाई जमीअत अहले हदीस हिन्द दिल्ली के जिम्मेदारान शरीक हुये जिनमें प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस दिल्ली के सचिव मौलाना इरफान शाकिर, प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस दिल्ली के नायब अमीर हाजी कमरुद्दीन, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के मीडिया कोआरडीनेटर और इंजीनियर कमरुज्जमां उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार पूरे देश में सभी प्रादेशिक, जिलई, स्थानीय जमीअत अहले हदीस और दीनी और शैक्षिक संस्थाओं में पिछले वर्षों की तरह इस साल भी अत्यंत वैभव के साथ जश्ने आज़ादी मनाया गया।
(जरीदा तर्जुमान 9-9५ सितंबर २०१८)



कुरआन में छमा करने का उल्लेख

इस्लाम ने छमा और मआफ करने की बड़ी प्रशंसा की है और अपने अनुयाइयों को इस शिक्षा पर अमल करने का आदेश दिया है। निम्न सतरो में कुरआन की उन कुछ आयतों का उल्लेख किया जा रहा है जिन में क्षमा और मआफी की महत्ता और उसकी आवश्यकता बतायी गयी है।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है “लेकिन हमने बावजूद इसके फिर भी तुम्हें मआफ कर दिया ताकि तुम शुक्र करो” (सूरे बकरा-५२)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया:

“और अगर तुम बीमार हो या सफर में हो या तुम में से कोई कजाए हाजत से आया हो या तुम ने औरतों से मुबाशिरत की हो और तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी का कसद करो और अपने मुंह और अपने हाथ

मल लो, बेशक अल्लाह तआला मआफ करने वाला बख्शने वाला है” (सूरे निसा-४३)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

“बहुत संभव है कि अल्लाह उनसे दरगुज़र करे, अल्लाह तआला दरगुज़र करने वाला और मआफ करने वाला है” (सूरे निसा ४४)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

“अगर तुम किसी नेकी को एलानिया करो या पोशीदा, या किसी बुराई से दरगुज़र करो, पस यकीनन अल्लाह तआला पूरी मआफी देने वाला और पूरी कुदरत वाला है” (सूरे निसा-१४६)

फरमाया:

“अल्लाह तुझे मआफ फरमा दे, तूने उन्हें क्यों इजाज़त दे दी बगैर इसके कि तेरे सामने सच्चे लोग खुल जायें और तू झूठे लोगों को भी जान ले” (सूरे तौबा-४३)

“बात यही है और जिसने

बदला लिया उसी के बराबर जो उसके साथ किया गया था फिर अगर उससे ज्यादाती की जाये तो यकीनन अल्लाह तआला खुद उसकी मदद फरमायेगा बेशक अल्लाह दरगुज़र करने वाला बख्शने वाला है” (सूरे हज़-६०)

फरमाया:

“तुम्हें जो कुछ मुसीबतें पहुंचती हैं वह तुम्हारे अपने हाथों के करतूत का बदला है और वह तो बहुत सी बातों से दरगुज़र फरमा लेता है” (सूरे शूरा-३०)

फरमाया:

“अगर वह चाहे तो हवा बन्द कर दे और यह कश्तियां समुन्दरों पर रूकी रह जायें, यकीनन इसमें हर सब्र करने वाले शुक्र गुज़ार के लिये निशानियां हैं या उन्हें उनके करतूतों के सबब तबाह कर दे वह तो बहुत सी खताओं से दरगुज़र फरमाया करता है”। (सूरे शूरा-३३-३४)

कुरआन ने पूरी मानवता को

संबोधित किया है यह एक ऐसी दयालुता और उसके दया करूणा उनकी नहीं जिन पर गजब किताब है जो लोगों को सीधी का उल्लेख किया गया है : (प्रकोप) किया गया और न गुमराहों राह पर आने की अपील करती "सब तारीफ अल्लाह के की"। (9-७ सूरे फातिहा) है, कुरआन की पहली सूरत में लिये है जो तमाम संसारों का कुरआन की पहली सूरत में पालने वाला है बड़ा मेहरबान, कुरआन के अवतरित होने रहम करने वाला, बदले के दिन में दया करूणा और मआफ करने का मकसद बता दिया गया है। (महा प्रलय) का मालिक है, हम की अहमियत को संपूर्ण रूप से कुरआन की पहली सूरत सूरे उजागर किया गया है, ज़रूरत फातिहा का यहां पर हिन्दी अनुवाद इस बात की है कि इन्सान भी पेश किया जा रहा है ताकि इस और केवल तुझ ही से मदद चाहते अपने अन्दर दया करूणा और कुरआन के उद्देश्य का सहीह हैं, हमें सीधी (और सच्ची) राह क्षमा करने की भावना पैदा करे ज्ञान सबको हो सके। कुरआन दिखा, उन लोगों की राह पर सीधे मार्ग पर चलकर अपने की इस सूरत में भी अल्लाह की जिन पर तुम ने इंआम किया, पालनहार का प्रिय बन्दा बने।

अहले हदीस रिलीफ फण्ड

सैलाब से प्रभावितों के लिये मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की हमदर्दानी अपील

केराला में सैलाब की वजह से लाखों लोग अपना घर बार छोड़ कर अस्थायी कैम्पों में श्रण लिये हुये हैं इसके अलावा बाज राज्य भी सैलाब से प्रभावित हैं जिनकी मदद करना हमारा धार्मिक, मिल्ली और मानवीय कर्तव्य है। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपनी प्राचीन इतिहासिक परम्परा के अनुसार बेघर और उजड़े हुये लोगों के लिये रिलीफ और राहत का काम कर रही है। तमाम असहाबे खैर और साहबे सरवत हज़रात से अपील है कि यथाशक्ति सैलाब प्रभावितों और अत्यंत मुसीबत में फंसे लोगों की सहायता में हिस्सा लेकर अल्लाह की तरफ से पुण्य के पात्र बनें। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपनी तमाम उप शाखाओं से अपील करती है कि विशेष ध्यान दें।

नोट:- चेक और ड्राफ्ट निम्नलिखित नाम से बनवायें और भेजी हुयी रक़म की मद को स्पष्ट करें। अल्लाह आपको बेहतरीन बदला दे।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICIC Bank) Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)

4116, बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-६ Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

(प्रेस रिलीज़)

प्रसिद्ध आलिमे दीन उस्ताजुल असातजा मौलाना अब्दुस्सलाम मदनी के निधन पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जिम्मेदारान का शोक-सन्देश

दिल्ली १६ जुलाई २०१८
मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस
हिन्द के अमीर मौलाना असगर
अली इमाम महदी सलफी ने
अपनी एक प्रेस रिलीज में प्रसिद्ध
आलिमे दीन प्रख्यात शैक्षिक संस्था
जामिया सलफिया मर्कज़ी दाखूल
उलूम वाराणसी के पूर्व शैखुल
हदीस अध्यापकों के अध्यापक
(उस्ताजुल असातिजा) मौलाना
अब्दुस्सलाम मदनी के निधन पर
अपने रंज व गम का इज़हार
किया है और उनकी मौत को
देश व मिल्लत, जमाअत और
ज्ञानात्मक जगत का महान घाटा
करार दिया है। मौलाना काफी
अर्से से बीमार थे और नोएडा
के स्पताल में उपचाराधीन थे
अन्ततः लगभग ५ बजे सांय ७४

साल की उम्र में इन्तेकाल हो
गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना
इलैहि राजिऊन

सम्माननीय अमीर ने कहा
कि आदरणीय अध्यापक मौलाना
अब्दुस्सलाम मदनी ७ फरवरी
१९४४ को मौजूदा जिला सिद्धार्थ
नगर बस्ती टिकरया में पैदा हुये
और अपने गांव की संस्था जामिया
मिफताहुल उलूम में प्रारंभिक शिक्षा
प्राप्त की फिर जामिया सिराजुल
उलूम बौडिहार गये और वहां
सेकेण्डरी (माध्यमिक) तक की
शिक्षा मुकम्मल की इसके बाद
वाराणसी गये १९६० ई० में
जामिया रहमानिया वाराणसी में
दाखिला लिया और वहां फजीलत
अव्वल तक की शिक्षा प्राप्त की।
१९६६ ई० में शिक्षा ही के दौरान

जामिया सलफिया वाराणसी के
नामांकन (तरशीह) पर जामिया
इस्लामिया मदीना मुनव्वरा में
दाखिले का सौभाग्य प्राप्त हुआ
और वहां से १९७० ई० में बी ए
की डिग्री हासिल की।

आपके प्रसिद्ध अध्यापकों में
अल्लामा नज़ीर अहमद अमलवी
रहमानी, उबैदुल्लाह रहमानी
मुबारकपुरी, शैख मुहम्मद इकबाल
रहमानी, शैख आबिद हसन
रहमानी, शैख अब्दुल मोहसिन
अल अब्बाद, डा० तकीउददीन
हिलाली, शैख मुहम्मद अहमद
शंकीती, शैख ममदूह फखरी शामी
काबिले जिक्र हैं। इसी प्रकार
मौलाना के शिष्यों की तादाद
असंख्य है। जो अपनी अपनी
जगह दीनी, शैक्षिक, संगठनात्मक

और दावती सेवाएं अंजाम दे रहे हैं और यह उनके लिये यकीनन सद्-कए-जारिया होंगे। इन्शाअल्लाह।

शिक्षा प्राप्त करने के बाद सबसे पहले उम्मुल जामिआत जामिया सलफिया वाराणसी से पठन-पाठन का आरंभ करने का अवसर मिला और ३२ साल हदीस, उलूमे हदीस, अकीदा फिकह और अरबी साहित्य की किताबें पढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त वह एक जमाने तक जामिया में शैखुल हदीस के महान पद पर विराजमान रहे। आपने लेखन और संकलन के मैदान में भी बहुमूल्य सेवाएं अंजाम दीं। जामिया की पत्रिका मुहद्दिस में आप निरन्तर दर्से हदीस लिखते रहे। दावत के मैदान में भी आपकी सेवाएं उल्लेखनीय हैं, बड़े बड़े दावती प्रोग्रामों में आपको बड़े एहतमाम से बुलाया जाता था और लोग आपकी तकरीर बहुत पसन्द करते थे।

सम्माननीय अमीर ने कहा

कि मौलाना अब्दुस्सलाम मदनी साहब एक अनुभवी अध्यापक मंझे हुये वक्ता और निडर प्रचारक थे, उनका प्रशिक्षण का अन्दाज़ भी निराला था। हदीस, फिकह और दीनी मसाइल पर गहरी नज़र थी। उनकी वफात न केवल उनके परिवार बल्कि पूरी जमाअत व मिल्लत का महान घाटा है जिसकी भरपाई बज़ाहिर मुशिकल नज़र आती है। उल्लेखनीय है कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने मौलाना की व्यापक ज्ञानात्मक और दावती सेवाओं के एतराफ में उनको तैतीसवीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेंस दिल्ली की ऐतिहासिक कांफ्रेंस के अवसर पर एवार्ड दिया था।

पसमांदगान में बेवा के अलावा पांच लड़के डा० अब्दुल हक, डा० अब्दुन्नूर, डा० अब्दुल बासित, अब्दुज्जाहिर, अब्दुल वासेअ और पांच लड़कियां हैं। सभी बच्चे बच्चियां उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। तदफीन कल तीन बजे पैत्रिक गांव टिकरया में होगी।

प्रेस रिलीज के अनुसार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी, नायब अमीर डा० सैयद अब्दुल अजीज, हाफिज अब्दुल कैयूम, महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली, कोषायक्ष अल हाज वकील परवेज़, नायब नाज़िम मौलाना रियाज अहमद सलफी और अन्य जिम्मेदारान और कार्य एवं सलाहकार समीति के सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं ने भी मौलाना के पसमांदगान से हार्दिक शोक व्यक्त किया है और दुआ की है कि अल्लाह उनकी कमियों को मआफ करे और नेकियों को कुबूल और जन्नतुल फिरदौस में उच्च स्थान प्रदान करे, इस दुनिया से जो बड़े ओलमा लगातार उठते जा रहे हैं तू उनका अच्छा विकल्प अता फरमा। आमीन या रब्बल आलमीन। (जरीदा तर्जुमान १-१५ अगस्त २०१८)

□□□

पारिवारिक संबन्ध हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श की रोशनी में

नसरीन फ़ातिमा

रिसर्च स्कालर अली गढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी

परिवार मानवीय संबन्धों की एक ऐसी कड़ी है जो आपस में दूसरे से एकता एवं मेल मिलाप पर टिकी है जिस में आपस के लोगों की कुछ कुर्बानियां, एक दूसरे पर विश्वास और एक दूसरे का प्रोत्साहन, आपस की एकता और मुहब्बत मिली जुली होती है। परिवार की कल्पना एकता एवं प्रेम भाव के बिना संभव नहीं है।

इस्लाम ने मानव-सेवा, मानव अधिकार, रिश्ते नातेदारों के अधिकार, रहन सहन और समाज को केवल एक अंग नहीं बल्कि पुण्य का व्यापक धारणा करार देता है क्योंकि नेकी (पुण्य) का वास्तविक अर्थ ही अधिकारों की अदायगी है।

घर या खानदान पर खर्च करना भी नेकी में शामिल है अर्थात् घर में जितने सदस्य रहते हैं सबकी आवश्यकताओं को पूरा किया जाये, किसी को उसके अधिकार से वंचित न किया जाये, सबकी आवश्यकताओं का ख्याल

रखा जाये। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम में से बेहतरीन शख्स वह है जो अपने घर वालों के हक में बेहतर हो। (सुनन तिर्मिज़ी, सहीह इब्ने हिब्बान) खानदान के माहौल को बेहतर बनाने के लिये ज़रूरी है कि आपस में प्रेम, दया हो एक दूसरे के सम्मान का भी ख्याल रखा जाये मां बाप के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का व्यवहारिक आदर्श हमें यह शिक्षा देता है कि हर शख्स अपनी तरफ से रिश्ता नाता जोड़े, खानदान और रिश्तेदारों के अधिकार को अदा करता रहे अब उसके लिये ज़रूरी नहीं कि इसका बदला मिले या नहीं, बस अपनी तरफ से किसी के हक में कोताही न करे और स्वयं को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श का पाबन्द बनाये। अगर हर शख्स अपने ऊपर लागू होने वाले अधिकार एवं कर्तव्यों को पूरा करे तो हर

शख्स तक उसके अधिकार स्वयं पहुंचते रहेंगे क्योंकि इस्लाम की शिक्षा यही है कि खानदान के आपसी तअल्लुकात को मजबूत बनाया और जोड़ा जाये। इस्लाम धर्म मानव जीवन को दो आधार प्रदान करता है पहली बुनियाद यह है कि इन्सान और उसके पालनहार के बीच संबन्ध मजबूत हो दूसरा आधार यह है कि इन्सान के इन्सानों के साथ संबंध स्थापित और बेहतर हों।

पाश्चात्य जगत तो रिश्तों की सभ्यता को बहुत पहले भुला चुका है उनके यहां तो मानवता के साथ खूनी रिश्तों की भी कोई वैलू नहीं है इसी सोच के तहत पाश्चात्य जगत अब अपनी इस सभ्यता को पूरी दुनिया में प्रचलित करना चाहता है और आज की यह पीढ़ी बहुत तेज़ी से पाश्चात्य जगत के इस जाल में फंसती चली जा रही है और उनकी बनाई हुई चीज़ों को सहर्ष स्वीकार कर रही है।

□□□

आप का स्वास्थ्य

डा० एम एन बैग

भाग दौड़ की जिन्दगी, चाय की भरमार, चाय के साथ अधिकांश तौर पर नक्कीन, फास्ट फूड, खाना खाने के समय से संबन्धित पाबन्दी का अभाव, तली हुयी चीजें जैसे पराठा, पूड़ी, कचौड़ी वगैरह का ज्यादा से ज्यादा स्तेमाल और दूसरे कारण से कब्ज मौजूदा दौर की बहुत कठिन समस्या बन गया है।

इसके कारणों से छुटकारा पाना चूंकि आसान नहीं है इसलिये कब्ज के मरीज़ चूरन का सहारा लेते हैं और मुतमइन हो जाते हैं कि समस्या का समाधान हो गया।

यह बात सहीह है कि चूरन कब्ज को दूर करते हैं, त्वरित प्रभावी होते हैं और इजाबत खुल कर होती है लेकिन ज़रूरी शर्त यह है कि चूरन का प्रयोग एक दिन भी न छोड़ा जाये। इसे मजबूरन पाबन्दी से प्रयोग करना ही होता है। चूरन में नौशादार, काला नमका, सेंधा नमक, तुर्बद, सिना, लेमूँ का रस, हरड़ बहेड़ा

आमला के अलावा दूसरे भाग होते हैं जब कि सभी भाग अपनी तेज़ी और खराश पैदा करने वाली विशेषताओं की वजह से आंतों में खुशकी पैदा करने के अलावा अलसर के लिये भी राह प्रशस्त करते हैं।

कब्ज को दूर करने के लिये अस्बगोल की भूसी और रोगन बादाम से ज्यादा लाभदायक और कुछ नहीं इसके कुछ भी बुरे प्रभाव भी नहीं पड़ते।

इस्तेमाल करने का तरीका यह है कि रोजाना सोते समय ५ एम.एल रोगन बादाम शीरी, एक गिलास या आधे गिलास दूध में मिलाकर पी लिया करें अगर दो तीन दिन तक इस्तेमाल करने के बाद खुलासा न हो तो १० एम एल रोगन बादाम लेना शुरू करें। अगर अस्तबगोल एक ग्राम या दो ग्राम भी फाक कर दूध पी लिया करें तो बहुत लाभदायक साबित होगा।

रोगन बादाम शीरी कब्ज दूर करने के साथ दिमाग भी रोशन

करता है, आमाशय (मेअ़दा), आंतों की खुशकी या सूखापन दूर करता है, आंखों की रोशनी बढ़ाता है, मुख्य शारीरिक अंगों को शक्ति प्रदान करता है पेटों के तनाव पर कन्ट्रोल करता है, चेहरे की जिल्द की रंगत को निखारता है, बालों को झड़ने और गिरने से रोकता है, रोगन बादाम शीरी स्वयं एक प्रभावी और भरोसे मन्द टानिक है।

मधुमेह (शूगर) की बीमारी न हो और पेशाब की अधिकता की शिकायत हो तो इसकी वजह परोस्टेट गलैण्ड का साइज़ बढ़ जाना है। इसका साइज़ थोड़ा या ज्यादा हर मर्द का बढ़ जाता है। अगर कैन्सर की संभावना नहीं है तो ऐसी सूरत में एक गोली यूरीमैक्स-डी रोज़ाना दोपहर को लें, पेशाब में रूकावट भी नहीं हो गी और पेशाब खुल कर हो गा, इस पर पाबन्दी से अमल करें।

□□□

पर्यावरण की सुरक्षा

एन. अहमद

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

“आसमान और ज़मीन की पैदाइश में और रात दिन की तबदीली में और उन जहाज़ों में जो समुद्र में लोगों के नफ़ा को चलते हैं और अल्लाह के आकाश से उतारे हुये पानी में जिससे ज़मीन को खुशकी के बाद ताज़ा करता है और उस में हर प्रकार के जानवर फैलाता है और हवाओं के फेरने में और उन बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दर्मियान घिरे हुये हैं, बेशक अक्ल वालों के लिये बहुत सी निशानियां हैं”। (सूरे बक्रा-96:8)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

“सूरज और चांद हिसाब से चलते हैं (यह अल्लाह की मख्लूक (सृष्टि) हैं फिर माअबूद (पूज्य) कैसे हो सकते हैं), (इसी

प्रकार) सितारे और तनादार दरख्त अल्लाह को सजता करते हैं, इसी प्रकार अल्लाह ने आसमान को बुलन्द किया और मीज़ान (इन्साफ़ का कानून) बनाया, (और लोगों को हुक्म दिया कि) इन्साफ़ करने में बेएतेदाली (बेउसूली) न करो और तुम इन्साफ़ के साथ वज़न और माप पूरा किया करो और (माप) तौल कम न किया करो और अल्लाह ने यह ज़मीन इन्सानों के (रहने सहने के) लिये बनाई है”। (सूरे रहमान 5-90)

कुरआन की इन दोनों सूरतों की आयतों में अल्लाह ने इन्सान को संबोधित करते हुये कहा है कि इस दुनिया में जो नेमते इन्सान को दी गयी हैं उनका संतुलित इस्तेमाल किया जाये, अल्लाहअपने बन्दों के बारे में पूरी जानकारी रखता है कि उसके लिये कौन सी चीज़ लाभदायक है और कौन

सी चीज़ हानिकारक? इन आयतों में पर्यावरण की सुरक्षा का तरीका और नियम बताया गया है। अगर नियम के अनुसार संसार की चीज़ों का इस्तेमाल होगा तो पर्यावरण अपनी असली हालत पर बाकी रहेगा वर्ना इस दुनिया में पर्यावरण में असंतुलन पैदा होता जायेगा।

साइंस के रिसर्च ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ओजोन नामक गैस की परत जो सूरज की शुआओं (रेज) में मौजूद अल्ट्रा वायलेट शुआओं के हानिकारक प्रभाव से बचाता है लेकिन उसमें सूरख हो जाने के कारण मौसम की व्यवस्था बदल गयी है। यह परिवर्तन पूरी मानवता के लिये खतरे का संकेत है।

यह हकीकत है कि इन्सान के अन्दर किसी भी चीज़ की सुरक्षा का एहसास उस वक्त पैदा होता है जब उसमें हानिकारक प्रभाव

स्पष्ट होने लगते हैं, आज हम देख रहे हैं कि मानव आबादी पर्यावरण की सुरक्षा न करने के कारण विभिन्न प्रकार की बीमारियों में लिप्त होती चली जा रही है। आज लोगों को सांस की बीमारी गुर्दे की बीमारी और इसी प्रकार से जो अन्य बीमारियां पैदा हो रही हैं यह पर्यावरण की सुरक्षा न करने की वजह से है। इन्सान की लापरवाही ने इस तरक्कियाती दौर में पानी को इतना दूषित बना दिया है कि अब पानी का कोई भी स्रोत सुरक्षित नहीं रह गया है यही वजह है कि आज मिनरल वाटर के नाम पर पानी का क्रय-विक्रय जिस प्रकार से हो रहा है वह स्थायी रूप से एक व्यवहार बनता जा रहा है बताया जाता है कि अब पानी का व्यवहार विश्व स्तर पर अरबों खरबों डालर तक पहुंच गया है क्या हम लोग इसके जिम्मेदार नहीं हैं?

हम टीवी चैनलों और समाचार पत्रों के विज्ञापनों में यह

देखते और पढ़ते हैं जिस में यह अपील की जाती है कि पानी को फालतू खर्च मत करो, वर्ना एक दिन ऐसा भी आयेगा कि लोग पानी की बूंद बूंद के लिये तरसेंगे लेकिन इन विज्ञापनों का क्या प्रभाव पड़ रहा है, इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि कितनी लापरवाही हो रही है यह हमारी लापरवाही का ही नतीजा है कि दिन ब दिन पानी की किल्लत होती जा रही है और लोग साफ पानी के लिये कितना परेशान हो रहे हैं।

पेड़ पौधे पर्यावरण को सुरक्षित रखने और पर्यावरण को अपनी असली हालत पर बाकी रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं लेकिन पेड़ों और पौधों को काटने का जो सिलसिला आरंभ हुआ है उसने पर्यावरण व्यवस्था को असंतुलित कर दिया है। साइंस का रिसर्च है कि पेड़ पौधे अपने अनदर जहरीली हवा को समाहित करके जानदारों के लिये साफ

हवा छोड़ते हैं जो मानव जीवन और हर जानदार के लिये अत्यन्त आवश्यक है। जब पेड़ पौधे नहीं रहेंगे तो साफ हवा कहां से मिलेगी, यह अत्यंत चिंताजनक बात है।

सरकारों की तरफ से पर्यावरण की सुरक्षा के लिये वृक्षारोपण (शजरकारी) अभियान चलाया जा रहा है, ऐसे अभियानों में हम सभी को बढ़ चढ़ कर भाग लेना चाहिये। पर्यावरण की सुरक्षा के बारे में इस्लाम ने जो सिद्धांत बताये हैं उनको अपना कर पर्यावरण की समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है। इस्लाम की शिक्षा यह है कि अल्लाह ने इन्सानों को जो नेमतें दी हैं उनका संतुलित प्रयोग किया जाये यही पर्यावरण समस्या का बेहतरीन समाधान है अगर इन्सान इसके विपरीत कदम उठाये गा तो पर्यावरण का नकारात्मक बदलाव पूरी मानवता के लिये घातक साबित हो सकता है।

□□□

इस्लाम में बुनियादी अधिकार

शैख़ मुहम्मद बिन सालेह अल उसैमीन

आम मुसलमानों के अधिकार: नबी स०अ०व० ने फरमाया: एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर छः हक़ हैं जब मुलाकात हो तो “अस्सलामो अलैकुम” कहे और जब वह दावत दे तो उसको कुबूल करे, जब भलाई मांगे तो उसके साथ भलाई का मामला करे और जब छीक आये तो “अल हम्दुलिल्लाह” कहे तो इसके जवाब में “यरहमेकल्लाह” कहे और जब बीमार हो तो उसका हाल चाल मालूम करे और जब वफात हो जाये तो उसके जनाज़े में शामिल हो।

इस हदीस में यह बयान किया गया है कि मुसलमानों के एक दूसरों पर क्या हुकूक हैं।

पहला हक़ अस्सलामो अलैकुम कहना है। सलाम करना सुन्नते मुअक्कदा है और लोगों में प्रेम भाव पैदा करने का एक माध्यम है जैसा कि देखा गया है अल्लाह के रसूल स०अ०व० ने फरमाया:

“अल्लाह की कसम! जब तक तुम ईमान नहीं लाओगे, जन्नत में दाखिल न होगे और जब तक

आपस में प्रेम नहीं करोगे मोमिन नहीं होंगे। क्या मैं तुम्हें एक ऐसी बात न बताऊँ कि जब तुम इस पर अमल करोगे तो आपस में प्रेम करने लगोगे। आपस में “अस्सलामो अलैकुम” खूब फैलाओ और अल्लाह के रसूल स०अ०व० स्वयं हर मिलने वाले से सलाम करते और जब बच्चों के पास से गुज़रते तो उनसे भी सलाम करते।

सुन्नत यह है कि छोटा बड़े को सलाम करे और थोड़े लोग ज़्यादा लोगों को और सवार पैदल चलने वालों से सलाम करे। अगर कोई सलाम न कर सके तो दूसरा सलाम कर ले इसी तरह अगर कम तादाद वाले सलाम न कर सकें तो ज़्यादा तादाद वाले सलाम कर लें ताकि दोनों को सवाब मिल जाये।

अम्मार बिन यासिर बयान करते हैं कि तीन चीज़ें ऐसी हैं जो शख्स इनको इकट्ठा करले गा उसका ईमान पूरा हो गया। अपने आप से भी इन्साफ़ करना, सब लोगों को सलाम कहना और तंगी की हालत में खर्च करना। सलाम

की शुरूआत करना सुन्नत है मगर इसका जवाब देना फर्ज़ किफ़ायत है अर्थात अगर एक शख्स भी जवाब दे दे तो सबकी तरफ से काफ़ी हो जाता है।

इसका मतलब यह हुआ कि कोई शख्स किसी जमाअत को सलाम कहे तो उनमें से कोई एक सलाम का जवाब दे दे तो तमाम लोगों की तरफ सलाम का जवाब हो जाता है। अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है “और जब तुम को कोई सलाम कहे तो तुम उससे बेहतर अन्दाज़ में जवाब दो या वैसे ही शब्द से जवाब दे दो”।

सलाम के जवाब में “अहलन व सहलन” कहना काफ़ी नहीं है क्योंकि यह शब्द न सलाम से अच्छे हैं और न ही इसके समान हैं इसलिये जब कोई “अस्सलामो अलैकुम” कहे तो इसके जवाब में व अलैकुम अस्सलाम कहे।

दूसरा हक़: जब कोई भाई दावत दे तो उसे कुबूल कर ले अर्थात जब कोई अपने घर खाने के लिये बुलाये या किसी और

नेक काम के लिये बुलाये तो उसकी बात मान ले और दावत को कुबूल करना सुन्नते मुक्कदा है क्योंकि इससे प्रेम भाव पैदा होता है। नबी स०अ०व० ने फरमाया: जिसने दावत कुबूल न की तो उसने अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी की। नबी स०अ०व० का यह कथन कि “जब दावत दी जाये तो उसे कुबूल करो” का अर्थ ऐसी दावत है जिस में सहायता करने का हुक्म दिया गया है। नबी स०अ०व० ने फरमाया: एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये मकान की तरह है जिसका एक भाग दूसरे भाग को मजबूत करता है।

तीसरा हक: जब तुम से भलाई मांगी जाये तो भलाई का व्यवहार करो यह भी दीन का एक भाग है।

नबी करीम स०अ०व० ने फरमाया: दीन भलाई का नाम है, अल्लाह से उसकी किताब से उसके रसूल से मुसलमानों के इमामों से और आम मुसलमानों से।

अगर कोई भलाई मांगने न आये और स्थिति यह हो कि दूसरे को कोई नुकसान पहुंचने वाला हो या वह किसी गुनाह में लिप्त होने वाला हो तो हम पर वाजिब है कि उसके साथ भलाई

करें।

चौथा हक यह है कि जब किसी को छींक आये तो अलहम्दुलिल्लाह कहे और सुनने वाला यरहमो कल्लाह कहे और जब छींकने वाला अलहम्दुलिल्लाह न कहे तो फिर उसका यह हक नहीं रह गया कि उसके लिये यरहमो कल्लाह कहा जाये क्योंकि उसने अल्लाह की तारीफ नहीं बयान की इसलिये बदला नहीं है कि यरहमोकल्लाह कहा जाये।

जब छींकने वाला अलहम्दुलिल्लाह कह दे तो फिर जवाब देना वाजिब है।

पांचवां हक यह है कि जब बीमार हो तो उसका हाल चाल मालूम करे, मुलाकात करे यह वाजिब है और जब मरीज से किसी तरह का रिश्ता नाता हो या पड़ोसी हो तो उसकी इयादत जरूरी हो जाती है।

छठा हक यह है कि जब मुसलमान भाई का इन्तेकाल हो तो उसके जनाजे में शामिल हो तो उसके जनाजे में शामिल हो इसमें बड़ा सवाब है। नबी स०अ०व० ने फरमाया: जो शख्स जनाजे के पीछे और जनाजे की नमाज़ पढ़े तो उसके लिये एक कीरात का सवाब है और जो जनाजे के पीछे चले और दफन

कर दिया जाये तो उसके लिये दो कीरात का सवाब है आप स०अ०व० से पूछा गया कि यह कीरात क्या है आप ने फरमाये जैसे दो बड़े पहाड़।

सातवां हक एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर यह है कि उसे दुख न पहुंचाये क्योंकि दुख पहुंचाना महा पाप है। मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया: आपस में दुश्मनी न रखो, संबन्ध न तोड़ो, और अल्लाह के बन्दे भाई भाई बन जाओ मुसलमान मुसलमान का भाई है। न उस पर जुल्म करता है न उसको असहायक छोड़ता है न उसका अपमान करता है अपने भाई का अपमान करना किसी इंसान के बुरे होने की पहचान है मुसलमान पर हर मुसलमान का खून उसका माल और उसकी इज्जत हराम है।

एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर अनेक अधिकार हैं लेकिन मुहम्मद स०अ०व० के कथन “मुसलमान मुसलमान का भाई है” के अनुसार तकाज़ा यह है कि वह हर मामले में एक दूसरे के साथ भलाई का मामला करें और हर उस काम से दूर रहें जिससे उसको दुख पहुँचता हो।

□□□

बच्चों में डिपरेशन का एलाज

लेखक: रज़ान अल फज़ली

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

“जो लोग ईमान लाये उनके दिल अल्लाह के जिक्र से इतमीनान हासिल करते हैं। याद रखो अल्लाह के जिक्र से ही दिलों को तसल्ली होती है”। (सूरे रअद-२८)

अधिकांश लोग समझते हैं कि डिपरेशन (मानसिक दबाव) के मर्ज में केवल बड़ी आयु के लोग ही लिप्त होते हैं और बच्चों में यह मर्ज नहीं होता लेकिन यह दुखद है कि इस मर्ज का शिकार बच्चे भी ऐसे ही होते हैं जैसे बड़े होते हैं अगर डिपरेशन के लक्षण पाये जाते हैं तो जैसे जैसे बच्चे बड़े होते हैं वैसे वैसे डिपरेशन की संभावनाएं बढ़ती जाती हैं और इससे उसके शैक्षिक और समाजी मामले प्रभावित होते हैं।

डिपरेशन बच्चों और नौजवानों में अनोखा मर्ज नहीं है बल्कि तीन प्रतिशत बच्चे और नौ प्रतिशत नौजवान सख्त किस्म के डिपरेशन के शिकार होते हैं

और बहुत से बच्चे उचित उपचार से वंचित रहते हैं जिसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि अभिभावकों को इस बात का एहसास ही नहीं हो पाता कि उनके बच्चे को डिपरेशन का मर्ज है।

डिपरेशन का कारण खानदानी बिखराव, आर्थिक परेशानी और तंगी, परिवार वालों की जानिब से बच्चों के साथ बुरा व्यवहार, शारीरिक प्रताड़ना आदि है। अगर आप को यकीन हो जाये, कि बच्चा डिपरेशन का शिकार है तो बच्चों के डाक्टर या मनोवैज्ञानिक से संपर्क करें क्योंकि बच्चे का जितनी जल्द एलाज शुरू हो गा उतनी ही जल्दी वह सेहतयाब होगा।

बच्चों को डिपरेशन से सुरक्षित रखने का तरीका यह है कि उसे सख्त डांट डपट से परहेज़ किया जाये, उनका मज़ाक न उड़ाये, बच्चों का प्रोत्साहन करें, उनकी बात को अहमियत दी जाये और उन्हें कुछ न कुछ इंआम दिया जाये। उनके मनोबल को बढ़ाने का तरीका यह है कि

अर्बी से अनुवाद: अब्दुल मन्नान सलफी शिकरावी उनकी रूचियों और कुशलताओं पर शाबाशी दी जाये, बच्चों के सामने मां बाप कोई ऐसी बात न करें जिससे उसे निराशा का एहसास हो।

कभी कभी डिपरेशन अस्थायी (टम्परेरी) होता है जो एक दो हफ्ते से ज़्यादा नहीं रहता लेकिन अगर यह स्थिति परमानेन्ट रहे तो इस का एलाज कराने की ज़रूरत है।

बच्चे को इस बात पर आमादा किया जाये कि वह स्वयं के बारे में सकारात्मक बात करें और अपने कामों पर गर्व करें। डिपरेशन को दूर करने के लिये बच्चे की तारीफ की जाये, बच्चे को कुरआन करीम से जोड़ दिया जाये और वह इसे याद करे और अपनी उमर के हिसाब से इसमें गौर व फिक्र करें। हर वक्त खास तौर से मुश्किलात के वक्त अल्लाह को याद करने का आदी बनाया जाये यहां तक की उसके दिल व दिमाग में यह बात अच्छी तरह बैठ जाये।